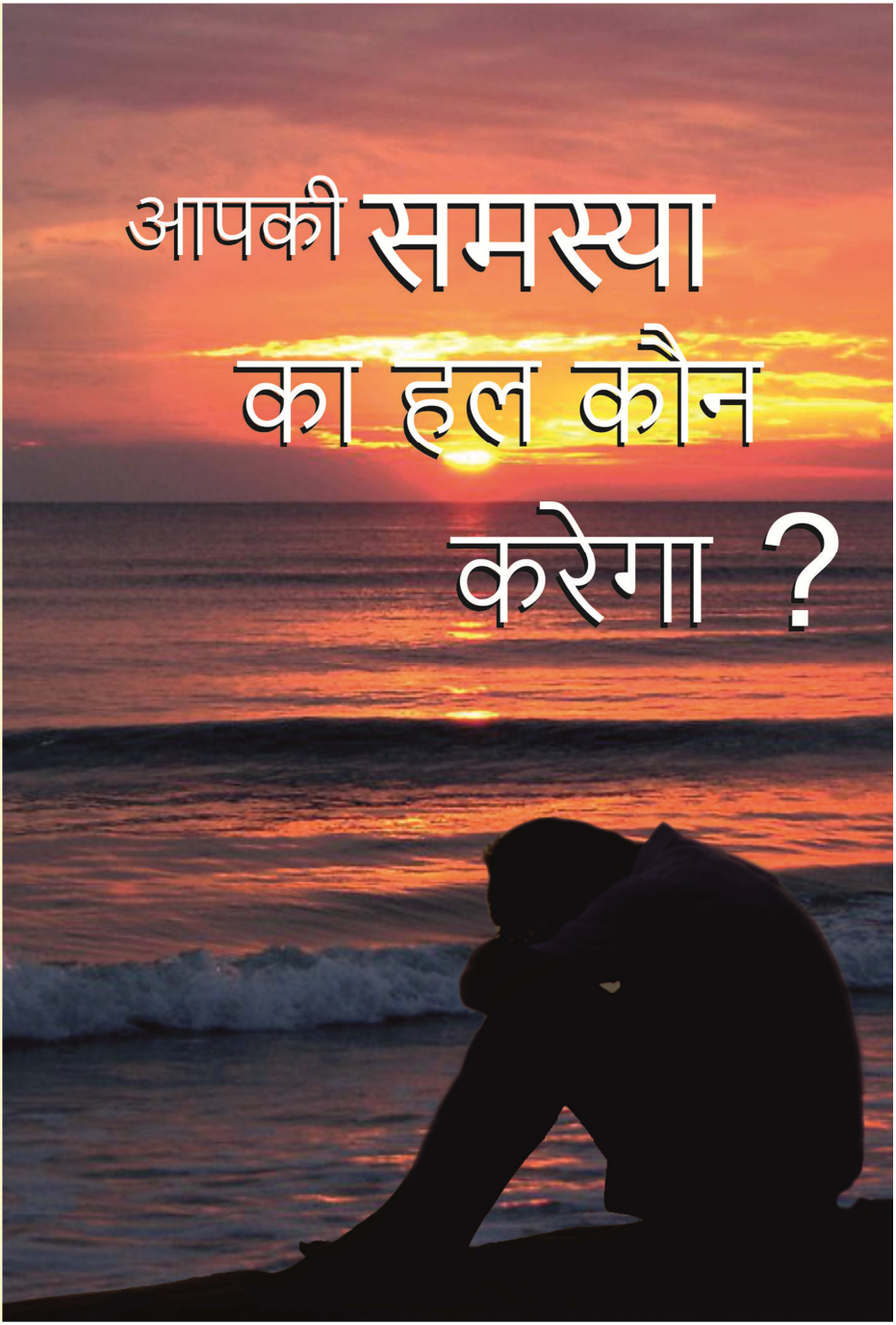
आपकी समस्या
का हल कौन
करेगा ?

इंसान को ज़िन्दगी में कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। लेकिन हर परेशानी से बढ़कर एक बहुत बडी समस्या है। बल्कि हर परेशानी का जड़ यही है। अन्य सभी परेशानियां पाप नामक घातक समस्या या बीमारी के प्रतीक मात्र हैं। परमेस्वर ही है जो ज़िंदगी की वास्तविकता और उसकी बडी समस्या को प्रकट करता है। हर इंसान पापी स्वभाव के साथ ही जन्म लेता है। "सब ने पाप किया है और परमेस्वर की महिमा से रहित हैं। (रोमियों ३ : २३) शिशु के पहले सांस से ही उसका पाप अपने आप को प्रकट करता है। हर इंसान अंदर से स्वार्थिक है। बचपन से बुढ़ापे तक इंसान स्वार्थ में बढ़ते जाता है। पाप के कई रूप होते हैं और वह अपने आप को हमारे विचारों, कल्पनाओं, तरंगों, इच्छाओं, उद्देश्यों, एवं दृष्टि, वचन और क्रिया द्वारा प्रकट करता है। "जो मनुष्य में से निकलता है वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। क्योकि भीतर से, अर्थात मनुष्य के मन से कुविचार, व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ और दुष्टता के काम तथा छल, कामुकता, ईर्ष्या, निंदा, अहंकार और मूर्खता निकलती हैं। ये सब बुराइयां भीतर से निकलती हैं और मनुष्य को अशुद्ध करती हैं। " (मरकुस ७ : २० - २३)

हर पाप हमें और भ्रष्टाचार के अंदर ले चलता है। पाप एक कैंसर के कोशिका से भी अधिक प्रबल तरीके से बढ़ता है। इंसान पाप का गुलाम बन जाता है; वह उसका सामना नहीं कर पाता बल्कि उसके शासन के आधीन हो जाता है। प्रभु यीशु ने कहा " मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, हर एक जो पाप करता है , पाप का दास है "(यहुन्ना ८:३४)। और फिर अचानक लोग मर जाते हैं और न्यायासन और अनंत विनाश के ओर बढ़ते हैं। याद करें कि परमेष्वर ने कहा "पाप की मजदूरी मृत्यु है। " (रोमियों ६:२३)

जो लोग पाप में मरते हैं, वे सनातन आग के झील में जा पहुंचेंगे जहाँ वे हमेशा हमेशा के लिए दुःख भोगेंगे। यही दूसरी मौत है। लोग अपने पाप की समस्या के हल के लिए कई तरीकों को अपनाते हैं। वे धर्म को अपनाते हैं, तपस्या को अपनाते हैं, पश्चाताप करके देखते हैं, पुण्य करके, दान देकर मैडिटेशन करके या फिर नास्तिक बनकर अपने पाप से छूटना चाहते हैं पर विफल हो जाते हैं। इंसान पाप को आसानी से निकाल या मिटा नहीं सकता है। " हम सब के सब अशुद्ध मनुष्य के जैसे हैं और हमारे धर्म के काम मैले चिथड़ों के समान हैं। " (यशायाह ६४:६)

दुनिया के कई तत्व ज्ञान और धार्मिक शिक्षा लोगों को यही सिखाते हैं कि तपस्या करने से या बाहरी तौर से पवित्र जीवन जीने से वे पुण्य कमा सकते हैं। और फिर वे क्षमा प्राप्त करके उद्धार पाकर स्वर्ग में प्रवेश कर सकते हैं। लेकिन यह बिलकुल सच नहीं है। "मैं जानता हूँ कि मुझ में अर्थात मेरे शरीर में कुछ भी भला वास नहीं करता। इच्छा तो मुझ में है, परंतु मुझसे भला कार्य हो नहीं पाता।" (रोमियों ७:१८)

हर व्यक्ति पाप से कलंकित है इसलिए वह जो भी करे, पवित्र परमेश्वर के सामने कभी अच्छा या योग्य नहीं गिना जायेगा। पाप के कारण हमारे दिमाग और दिल , आत्मा और शरीर सभी ब्रष्ट हैं। हमारे मन शान्ति चाहते हैं, दिल प्यार चाहते हैं, आत्मा सच्चे उधेश्य चाहते हैं और हम सच्ची तृप्ति की आस लगाए रखते हैं जो दुनिया में कही भी नहीं मिलती है। लोग पाप के कारण अंदर से सड़ते हैं। हम धरती पर नरक की ज़िन्दगी जीते हैं और फिर आग की झील में हमेशा के लिए पहुँच जाते हैं।

परमेश्वर सिद्ध है और वह हर तुलना से परे और अति पवित्र है। जब इंसान पाप में गिरा और परमेश्वर से अलग हुआ, तो परिणाम के रूप में मृत्यु और विनाश आए। पवित्र जन के लहू बहाए बिना पाप का निवारण नहीं है। प्रेमी परमेश्वर ने अपने प्यारे पुत्र यीशु मसीह को हमारे जगह में प्रायश्चितबली ठहराया। परमेश्वर इंसान को पाप और नरक से छुड़ाने के लिए पवित्र इंसान बना। यीशु एक कुंवारी से निष्पाप जन्म लिया, पाप रहित जिंदगी जिया और हमारे पाप को क्रूस पर अपने ऊपर ले लिया | यीशु ने क्रूस पर हमारे पाप, शर्म, दुख और दण्ड को अपने ऊपर ले लिया और हमारे पाप के फिरौती के लिए अपने बहुमूल्य लहू को बहाया।

वह मारा गया, गाड़ा गया और फिर तीसरे दिन विजयी होकर जी उठा | उसके छुटकारे के महान कार्य के कारण जो कोई अपने पाप से सच्ची तरह से मन फिराता है और उसपर भरोसा रखता है वह क्षमा किया जायेगा | वह वर्तमान जिंदगी में बर्बादी से और भविष्य में आग की झील से बचाया जायेगा। सिर्फ यीशु ही हमारे उद्धार और अनंतकाल कीआशा है "किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में कोई दूसरा नाम

नहीं दिया गया है, जिसके द्वारा हम उद्धार पाएं" (प्रेरितों ४:१२)। "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेशवर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है" (रोमियों ६:२३)। अब आप जानते हैं कि आपकी समस्या का हल कौन कर सकता है। तो फिर क्यों इंतजार करें? अपने पूरे दिल से पश्चाताप कीजिए, पाप को कबूल कीजिए और उसे छोड़ दीजिए। प्रभु यीशु मसीह पर भरोसा रखिए और उद्धार पाईए। " विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन परमेश्वर का दान है " (इफिसियों २:८)। अपनी जिंदगी को प्रभु यीशु मसीह के हवाले करो ओर बहुतायत की जिंदगी जियो।

प्रार्थना और सलाह के लिए:

विक्ट्री वरशिप सेंटर

ताड़बन्द क्रॉस रोड्स
सिकंदराबाद.
Email: vwc@victorybibleministries.org.

All Scriptures are taken from The Holy Bible

©Copyright vbm 2017